

यजुर्वेद

अध्याय ४०

अनुवाद कर्ता: सञ्जय मोहन मित्तल

Yajurveda

Chapter 40

Translated by: Sañjay Mohan Mittal

साराँश

चालीसवें अध्याय में ईश्वर के सर्वव्यापी गतिरहित स्वरूप का वर्णन करते हुए ओ३म् को ईश्वर का प्राथमिक नाम घोषित किया गया है। आचार व्यवहार के मूल सिद्धान्तों का उपदेश देते हुए, सौ वर्ष तक जीने की इच्छा रखने की और जीवन के हर पल को अन्तिम पल की तरह जीने की सलाह दी गई है। अविनाशी प्रभु का ध्यान ही जन्म मृत्यु के चक्र से निकलने का मार्ग है। इसके अतिरिक्त प्रभु की मूर्खों से दूरी एवम् विद्वानों से समीपता बतलाते हुए आत्मज्ञान की अवेहलना करने के दोष दिखाए गए हैं। अज्ञान से विद्या की ओर ले जाने वाले चक्र के महत्त्व को बताते हुए विद्या से उत्पन्न अहंकार के प्रति सचेत किया गया है।

Synopsis

In the fortieth chapter, the sages have described the all pervading, omnipresent Supreme Being whose primary name is OM. Enumerating the basic code of conduct, they have advised everyone to desire to live for one hundred years for performing God's work and to live every moment of life as if it were the last. Keeping that indestructible God in our mind all the time, is the only way to attain salvation from the bondage of the cycle of life and death. While stating that God is very far from the ignorant and very close to the learned, they highlight the ills of ignoring the universal knowledge. While describing the importance of the virtuous cycle leading from ignorance to illumination, everyone is cautioned against the ego some may get after improper implementation of the knowledge acquired.

अथ चत्वारिंशाऽध्यायारम्भः

प्रथम मन्त्र में ईश्वर के आस्तित्व और उसको जानने के बाद कैसा व्यवहार करें, यह बताया है।

ईशावास्यमित्यस्य दीर्घतमा ऋषिः। आत्मा देवता। अनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः।

ईशा वास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्।

तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्य स्विद्धनम्॥१॥

ईशा वास्यम् इदम् सर्वम् यत् किम् च जगत्याम् जगत्।

तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः मा गृधः कस्य स्विद्धनम् ॥१॥

(ईशा) परम पिता परमेश्वर (इदम्) इस ब्रह्माण्ड में, (यत् किम्) जो भी (जगत्यां जगत्) अति विशाल से लेकर अतिसूक्ष्म जगत हैं, (सर्वम्) उन सभी में (वास्यम्) निवास करता है और उनको आच्छादित भी करता है। (तेन) उस परमेश्वर द्वारा (त्यक्तेन) मनुष्यों के लिए छोड़े गए भोग्य को त्याग की भावना से बिना लिस हुए (भुञ्जीथाः) भोगो (च) और (कस्य स्विद्धनम्) किसी के भी (धनम्) धन की (गृधः) अभिलाषा (मा) मत करो।

The first mantra describes the omnipresence of the God and defines some basic rules of conduct.

ṛiṣhiḥ eeshaa-vaasyam-ityasya deerghatamaa, devataa aatmaa,
chhandah̐ anuṣṭup, svarah̐ gaandhaarah̐

**1. Om eeshaa vaasyam-idam sarvam
yat-kiñcha jagatyaañ jagat
tena tyaktena bhuñjeethaa
maa gridhaḥ kasya svid-dhanam**

(eeshaa) God (vaasyam) pervades and covers (sarvam) everything that exists (idam) here in this universe, (kiñcha) whatever (yat) those entities may be, (jagatyaañ) large celestial bodies or (jagat) smaller entities contained within an entity; (tena) in that universe (bhuñjeethaa) enjoy (tyaktena) with a feeling of detachment, whatever has been left for you by God and (maa) never (gridhaḥ) covet (kasya svid) someone else's (dhanam) wealth.

दूसरे मन्त्र में वेदोक्त कर्म की उत्तमता दर्शाई है।

कुर्वन्नित्यस्य दीर्घतमा ऋषिः। आत्मा देवता। भुरिगनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः।

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः ।

एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे ॥२॥

कुर्वन् एव इह कर्माणि जिजीविषेत् शतम् समाः ।

एवम् त्वयि न अन्यथा इतः अस्ति न कर्म लिप्यते नरे ॥२॥

(इह) इस संसार में प्रसन्नतापूर्वक (शतम्) सौ (समाः) वर्ष (जिजीविषेत्) जीने की इच्छा रखते हुए (एव) केवल (कर्माणि) वेदोक्त कर्म (कुर्वन्) करो। (एवम्) और (त्वयि) तेरे (नरे) अपने स्वार्थवश (कर्म) कोई भी कर्म (न) न (लिप्यते) करने से (इतः अन्यथा) अन्य विपथन (न) नहीं (अस्ति) रहते।

The second mantra describes the importance of selfless actions.

ṛiṣhiḥ kurvann-ityasya deerghatamaa, devataa aatmaa,
chhandahḥ bhuriganuṣṭup, svarahḥ gaandhaarahḥ

**2. Om kurvann-eveha karmaaṇi
jijeeviṣhech-chatam samaah
evan tvayi na-anyatheto'sti
na karma lipyate nare**

(eha) In this World, (jijeeviṣhech) with a desire to happily live for (chatam) one hundred (samaah) years, (kurvann) perform (ev) only (karmaaṇi) virtuous actions as sanctified in the Vedas (evan) and in order (eto) to (na asti) remove (aanyath) any diversions from the righteous path, (tvayi) you (na) should never (lipyate) be engaged (karma) in performing actions (nare) for selfish reasons.

तीसरे मन्त्र में बतलाया है कि आत्मिक ज्ञान को न मानने वालों की क्या गती होती है।

असुर्य्या इत्यस्य दीर्घतमा ऋषिः। आत्मा देवता। अनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः।

असुर्य्या नाम ते लोकाऽअन्धेन तमसावृताः ।

ताँस्ते प्रेत्यापि गच्छन्ति ये के चात्महनो जनाः ॥३॥

असुर्य्याः नाम ते लोकाः अन्धेन तमसा आवृता इत्याऽवृताः ।

तान् ते प्रेत्येति प्रऽइत्य अपि गच्छन्ति ये के च आत्महन इत्यात्महनः जनाः ॥३॥

(ते) वे (जनाः) मनुष्य जो (तमसा) अज्ञान के (अन्धेन) अन्धकार से (आवृता) ढके हुए हैं (च) और (के) कोई (आत्महन) आत्मिक ज्ञान के विरुद्ध आचरण करने वाले हैं, (ये असुर्य्याः) दैत्य राक्षस पिशाच आदि (नाम) नामों से जाने जाते हैं। (ते) वे (प्रेत्येति) मृत्योपरान्त और (अपि) जीवित अवस्था में भी (तान्) इनही अन्धकारपूर्ण (लोकाः) लोको को (गच्छन्ति) प्राप्त होते हैं।

The third mantra describes the fate of people who engage in self deprecating behavior by ignoring the divine knowledge.

ṛiṣhiḥ asuryyaa ityasya deerghatamaa, devataa aatmaa,
chhandah̐ anuṣṭup, svarah̐ gaandhaarah̐

**3. Om asuryyaa naama te
lokaa'andhena tamas-aavṛitaah̐
taanste pretya-api gachchhanti
ye ke chaatmahano janaah̐**

(ye) Those (janaah̐) humans (te) whose (ke aatmahano) conduct is contrary to the what is sanctified in the Vedas (ch) and who are (aavṛitaah̐) covered in (andhena) darkness (tamas) of ignorance (naama) are called (asuryyaa) demons; (te) they (pretya) on death (api) and even during life, (gachchhanti) go to (taans) those similar dark (lokaa) Worlds.

चौथे मन्त्र में ईश्वर के साक्षात्कार के विषय में बताया है।

अनेजदित्यस्य दीर्घतमा ऋषिः। ब्रह्म देवता। निचृत् त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः।

अनेजदेकं मनसो जवीयो नैन्देवाऽआप्नुवन् पूर्वमर्षत् ।

तद्धावतोऽन्यानत्येति तिष्ठत्तस्मिन्पो मातरिश्वा दधाति ॥४॥

अनेजत् एकम् मनसः जवीयः न एनत् देवाः आप्नुवन् पूर्वम् अर्षत्।

तत् धावतः अन्यान् अति एति तिष्ठत् तस्मिन् अपः मातरिश्वा दधाति॥४॥

वह (एकम्) एकमात्र (अनेजत्) गतिरहित दृढ परमात्मा जो (मनसः) मन की गति से भी (जवीयः) तेज सभी स्थानों पर (पूर्वम्) पहले से ही (अर्षत्) विद्यमान है, (एनत्) वह (देवाः) दृष्टि आदि इन्द्रियों से (आप्नुवन्) प्राप्त (न) नहीं होता। (तत्) वह (तिष्ठत्) सर्वत्र स्थिर हो अपनी सर्वव्यापकता और विस्तार के कारण (धावतः) विषयों के पीछे भागती हुई (अन्यान्) इन्द्रियों का (अति एति) उल्लङ्घन कर जाता है। स्वयं भाररहित होकर भी (तस्मिन्) वह (मातरिश्वा) वायुमण्डल में (अपः) जल के भार को (दधाति) धारण करता है।

Fourth mantra discusses the ways to get to God.

ṛiṣhiḥ anejadityasya deerghatamaa, devataa brahma,
chhandah nichṛit triṣṭup, svarah dhaivataḥ

4. Om anejad-ekam manaso javeeyo
na-inad-devaa'aapnuvan poorvam-arṣhat
tad-dhaavato'nyaan-atyeti tiṣṭhat-
tasminn-apo maatarishvaa dadhaati

(ekam) The One (anejad) unwavering God, who is (javeeyo) faster than (manaso) mind (arṣhat) already exists (poorvam) everywhere before anyone can reach there mentally or physically; (inad) that God (na) cannot be (aapnuvan) perceived through (devaa) senses. By virtue of his (tiṣṭhat) steadfast omnipresence and vastness, (tad) he is (atyeti) beyond (anyaan) the senses that are (dhaavato) chasing the material desires. (tasminn) He even while being weightless himself, (dadhaati) holds all of (apo) the water in (maatarishvaa) the atmosphere.

पाँचवे मन्त्र में ईश्वर के बारे में विद्वानों और अविद्वानों के विचार बताए हैं।
तदेजतीत्यस्य दीर्घतमा ऋषिः। आत्मा देवता। अनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः।

तदेजति तन्नैजति तद् दूरे तद्वन्तिके ।

तदन्तरस्य सर्वस्य तदु सर्वस्यास्य बाह्यतः ॥५॥

तत् एजति तत् न एजति तत् दूरे तत् ऊँऽइत्यूँ अन्तिके।

तत् अन्तः अस्य सर्वस्य तत् ऊँऽइत्यूँ सर्वस्य अस्य बाह्यतः॥५॥

(तत्) वह (न) स्वयं न (एजति) गति करते हुए भी (तत् एजति) इस ब्रह्माण्ड में सबको चलायमान रखता है। (तत्) वह (दूरे) अविद्वानों से बहुत दूर परन्तु (ऊँऽइत्यूँ) विद्वानों के ही (तत् अन्तिके) अत्यन्त समीप है। (तत्) वह (सर्वस्य) सबके के (अन्तः) अन्दर और (बाह्यतः) बाहर (ऊँऽइत्यूँ) भी (अस्य) विद्यमान है।

Fifth mantra discusses God's closeness to the learned and distance from the ignorant.

ṛiṣhiḥ tadejateetyasya deerghatamaa, devataa aatmaa,
chhandah anuṣṭup, svarah gaandhaarah

5. Om tad-ejati tan-naijati
tad doore tadv-antike
tad-antarasya sarvasya
tadu sarvasya-asya baahyataḥ

(tan) He (na) does not need to (ijati) move but (tad) he is (ejati) the causal force behind the movement of any entity; (tad) He (doore) seems very far to the ignorant but (tadv-antike) is very close to the learned; (tad) He (asya) exists (antarasya) inside (sarvasya) everyone (u) as well as (baahyataḥ) outside (sarvasya) everyone.

छठे मन्त्र में पुनः ईश्वर की सर्वव्यापकता के विषय में कहा है।

यस्त्वित्यस्य दीर्घतमा ऋषिः। आत्मा देवता। निचृदनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः।

यस्तु सर्वाणि भूतान्यात्मन्नेवानुपश्यति ।

सर्वभूतेषु चात्मानं ततो न वि चिकित्सति ॥६॥

यः तु सर्वाणि भूतानि आत्मन् एव अनुपश्यतीत्यनुपश्यति ।

सर्वभूतेष्विति सर्वभूतेषु च आत्मानम् ततः न वि चिकित्सति ॥६॥

(यः) जो विद्वान् (आत्मन्) परमात्मा के अन्दर (एव) ही (सर्वाणि) सब (भूतानि) प्राणीयों व अप्राणीयों को (अनुपश्यति) ध्यानदृष्टि से देखता है (च) और (तु) जो (सर्व) सब (भूतेषु) प्रकृत्यादि पदार्थों में भी (आत्मानम्) परमात्मा को देखता है (ततः) वह (वि चिकित्सति) भ्रम में (न) नहीं पड़ता।

Sixth mantra again describes the omnipresence of God.

ṛiṣhiḥ yastvityasya deerghatamaa, devataa aatmaa,
chhandahḥ nichṛīdanuṣṭup, svarahḥ gaandhaarah

**6. Om yastu sarvaāṇi bhootaany-
aatmann-eva-anupashyati
sarva-bhooṭeṣhu chaatmaanam
tato na vi chikitsati**

(yastu) That learned person who (eva) definitely (anupashyati) perceives (sarvaāṇi) the entire (bhootaany) creation (aatmann) as a part of God (ch) and (aatmaanam) God inside (sarva) every (bhooṭeṣhu) being and non living thing (tato) that person is (na) never (vi chikitsati) bothered by any disillusion.

सातवें मन्त्र में यह बतलाया है कि सभी प्राणियों के साथ स्वयं अपने जैसा व्यवहार करना ही उचित है।

यस्मिन्नित्यस्य दीर्घतमा ऋषिः। आत्मा देवता। निचृदनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः।

यस्मिन्त्सर्वाणि भूतान्यात्मैवाभूद्विजानतः ।

तत्र को मोहः कः शोकऽएकत्वमनुपश्यतः ॥ ७ ॥

यस्मिन् सर्वाणि भूतानि आत्मा एव अभूत् विजानत इति विजानतः ।

तत्र कः मोहः कः शोकः एकत्वमित्येकत्वम् अनुपश्यतऽइत्यनुपश्यतः ॥ ७ ॥

(यस्मिन्) जो विद्वान् (सर्वाणि) सभी (भूतानि) प्राणीमात्र को परमात्मा के सहचारी जान अपने (एव) ही (आत्मा) आत्मतुल्य (अभूत्) मानते हैं, उस (एकत्वम्) एकमात्र परमेश्वर में (विजानतः) ध्यानदृष्टि से अद्वितीय भाव (अनुपश्यतः) देखने वाले (तत्र) उन योगियों को (कः) कैसा (मोहः) मोह और (कः) कैसा (शोकः) शोक ।

Seventh mantra advises to treat all being as one would treat his/her own self.

ṛiṣhiḥ yasminnityasya deerghatamaa, devataa aatmaa,
chhandahḥ nichṛidanuṣṭup, svarahḥ gaandhaarah

**7. Om yasmint-sarvaani bhootaany-
aatma-iva-abhood-vijaanataḥ
tatra ko mohahḥ kahḥ shoka'
eka-tvam-anu-pashyataḥ**

(yasmint) Those learned humans who (abhood) perceive (sarvaani) every (bhootaany) being as God's companion (aatma-iva) and treat them as their own self, and (anu-pashyataḥ) view (eka-tvam) the unparalleled qualities of that one God (vijaanataḥ) through meditation, (ko) what is (mohahḥ) attachment and (kahḥ) what is (shoka) sorrow (tatra) to them.

आठवें मन्त्र में परमेश्वर के गुणों का विस्तृत वर्णन कर उसके उनही गुणों के कारण पूजा के योग्य बताया गया है।

स पर्य्यगादित्यस्य दीर्घतमा ऋषिः। आत्मा देवता। स्वराङ्गगती छन्दः। निषादः स्वरः।

स पर्यगाच्छुक्रमंकायमव्रणमस्नाविरं शुद्धमपापविद्धम् ।
 कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भूर्याथातथ्यतोऽर्थान्
 व्यदधाच्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः ॥८॥

सः परि अगात् शुक्रम अकायम् अव्रणम् अस्नाविरम् शुद्धम् अपापविद्धमित्यपापऽविद्धम् ।
 कविः मनीषी परिभूरिति परिभूः स्वयम्भूरिति स्वयम्भूः याथातथ्यत इति याथाऽतथ्यतः
 अर्थान् वि अदधात् शाश्वतीभ्यः समाभ्यः ॥८॥

जो (परि) सब जगह (अगात्) गया हुआ, (शुक्रम) शुद्ध स्वरूप (अकायम्) कायारहित,
 (अव्रणम्) छिद्ररहित, (अस्नाविरम्) कर्म बन्धनों से परे, (शुद्धम्) पवित्र, (अपापऽविद्धम्)
 पाप से दूर, (कविः) सर्वव्यापक, (मनीषी) सब जीवों की मनोवृत्ति जानने वाला, (परिभूः)
 दुष्ट पापियों का तिरस्कार करने वाला, (स्वयम्भूः) अनादि, (शाश्वतीभ्यः) उत्पत्ति और
 विनाश से रहित, (याथाऽतथ्यतः) यथार्थ भाव से (समाभ्यः) सबके लिए (अर्थान्) वेदों
 के ज्ञान को (वि अदधात्) विशेष कर बनाने वाला, (सः) वही परमेश्वर उपासना के योग्य
 है।

Eighth mantra details various abstract qualities of the God and declares that he is the only one to be worshipped because of those qualities.

ṛiṣhiḥ sa paryyagaadityasya deerghatamaa, devataa aatmaa,
 chhandahḥ svaraadjagatee, svarahḥ niṣhaadahḥ

8. Om sa pary-agaach-chukram-akaayam-avranam-asnaaviram
 shuddham-apaapa-viddham
 kavir-maneeṣhee pari-bhooh
 svayam-bhoor-yaathaa-tathyato'rthaan
 vy-adadhaach-chaashvateebhyaḥ samaabhyaḥ

The supreme being who is (agaach) already present (pary) all over, is (chukram) pure, (akaayam) without any physical body, (avranam) without any defects, (asnaaviram) beyond all actions, (shuddham) devoid of any impurities, (apaapa-viddham) distant from all sins, (kavir) omnipresent, (maneeṣhee) all knowing, (paribhooh) destroyer of evil, (svayambhoor) forever existing and never born,

(chaashvateebhyaḥ) indestructible, (vyadadhaach) provider of the (yaathaataathyato) true (arthaan) knowledge through Vedas to (samaabhyah) everyone; (sa) he is the only who should be worshipped.

नवेँ मन्त्र में जीवन के भोगों में रमे रहने वाले अथवा मृत्यु को आत्मा का अन्त मानने वाले, दोनों प्रकार के मनुष्यों के अन्धकारमय जीवन के बारे में कहा गया है।

अन्धन्तम इत्यस्य दीर्घतमा ऋषिः। आत्मा देवता। अनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः।

अन्धन्तमः प्र विशन्ति येऽसम्भूतिमुपासन्ते ।

ततो भूयऽइव ते तमो यऽउ सम्भूत्याऽं रताः ॥९॥

अन्धम् तमः प्र विशन्ति ये असम्भूतिमित्यसम्भूतिम् उपासन्त इत्युपऽआसन्ते ।

ततः भूयऽइवेति भूयःऽइव ते तमः ये ऊँऽइत्युँ सम्भूत्यामिति सम्भूत्याम् रताः ॥९॥

(ये) जो लोग (असम्भूतिम्) मृत्यु को आत्मा का अन्त मान उसकी (उपऽआसन्ते) उपासना करते हैं वे (अन्धम् तमः) अन्धकारमय जीवन (प्र विशन्ति) बिताते हैं और (ये) जो (सम्भूत्याम्) जीवन को ही इति मान सन्सारिक भोग विलास में (रताः) डूबे रहते हैं (ते) वे (ऊँ ततः भूयःऽइव) गहनतम (तमः) अन्धकार में जीते हैं।

Ninth mantra advises to look beyond the material pleasure and death and pray only the God who is truly worthy of our prayers.

ṛiṣhiḥ andhantama ityasya deerghatamaa, devataa aatmaa,
chhandah anuṣṭup, svarah gaandhaarah

**9. Om andhantamaḥ pra vishanti
ye'sambhootim-upaasate
tato bhooya'iva te tamo
ya'u sambhootyaam rataah**

(ye) Those who (upaasate) view (asambhootim) death as the end of soul (pra vishanti) remain in (andhantamaḥ) darkness and (ya) those who treat (sambhootyaam) life as ultimate and remain (rataah) engrossed in the material pleasures, (te) they (bhooya) are (iva) even in (tato u) greater (tamo) darkness.

दसवें मन्त्र में कहा है कि जीवन के भोगों में रमे रहने वाले अथवा मृत्यु को आत्मा का अन्त मानने वाले, दोनों के भिन्न परिणाम हैं।

अन्यदित्यस्य दीर्घतमा ऋषिः। आत्मा देवता। अनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः।

अन्यदेवाहुः सम्भवादन्यदाहुरसम्भवात् ।

इति शुश्रुम् धीराणां ये नस्तद्विचक्षिरे ॥१०॥

अन्यत् एव आहुः सम्भवादिति सम्भवात् अन्यत् आहुः असम्भवादित्यसम्भवात् ।

इति शुश्रुम् धीराणाम् ये नः तत् विचक्षिरे इति विचक्षिरे ॥१०॥

(धीराणाम्) विद्वानों के (तत् विचक्षिरे) व्याख्यानों में (नः) हम (इति) यही (शुश्रुम्) सुनते आए हैं कि (ये) वह (सम्भवात्) जीवन को सब कुछ मानने के परिणाम (अन्यत्) कुछ (आहुः) बताते हैं और (असम्भवात्) मृत्यु को आत्मा के अन्त मानने के परिणाम (अन्यत्) कुछ और (एव) ही (आहुः) बताते हैं।

Tenth mantra advises about different outcomes to being engrossed in the material pleasure and viewing the death as the end.

ṛiṣhiḥ anyadityasya deerghatamaa, devataa aatmaa,
chhandah̐ anuṣṭup, svarah̐ gaandhaarah̐

**10. Om anyad-ev-aahuḥ sambhavaad-
anyad-aahur-asambhavaat
iti shushruma dheeraaṇaāñ
ye nas-tad-vi-chachakṣhire**

(nas) **We** (shushruma) **hear from the** (vi-chachakṣhire) **discourses of the** (dheeraaṇaāñ) **learned** (tad iti) **that** (ye) **they** (aahuḥ) **say,** (sambhavaad) **being engrossed in the material pleasure brings** (anyad) **different results and** (asambhavaat) **believing death as the end of the soul brings** (anyad) **different results** (ev) **altogether.**

ग्यारहवें मन्त्र में जीवन और मृत्यु चक्र का ज्ञान है।

सम्भूतिमित्यस्य दीर्घतमा ऋषिः। आत्मा देवता। अनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः।

सम्भूतिं च विनाशं च यस्तद्वेदोभयं सह ।

विनाशेन मृत्युं तीर्त्वा सम्भूत्यामृतमश्नुते ॥११॥

सम्भूतिमिति सम्भूतिम् च विनाशमिति विनाशम् च यः तत् वेदं उभयम् सह ।

विनाशेनेति विनाशेन मृत्युम् तीर्त्वा सम्भूत्येति सम्भूत्या अमृतम् अश्नुते ॥११॥

(सम्भूतिम्) जीवन (च) और (विनाशम्) मृत्यु (उभयम्) दोनों (सह) साथ साथ हैं।
जन्म के साथ मृत्यु शुरू हो जाती है और मृत्यु के साथ ही जन्म, (तत्) यह (वेद) जान लेने वाला (यः) मनुष्य (सम्भूत्या) जन्म (विनाशेन मृत्युम्) मृत्यु चक्र से (तीर्त्वा) तर (अमृतम्) मोक्ष को (अश्नुते) प्राप्त होता है।

Eleventh mantra touches upon the cyclical nature of life and death.

ṛiṣhiḥ sambhootimityasya deerghatamaa, devataa aatmaa,
chhandahḥ anuṣṭup, svarahḥ gaandhaarah

**11. Om sambhootiñ cha vinaashañ cha
yas-tad-ved-obhayaṃ saha
vinaashena mṛityun teertvaa
sambhootya-amṛitam-ashnute**

(sambhootiñ) Life (cha) and (vinaashañ) death (obhayaṃ) both go (saha) hand in hand, with birth the process of aging and death starts and with death the process of new incarnation. (yas) That person who (ved) understands (tad) this cyclical nature, is (teertvaa) not bothered by the (vinaashena mṛityun) ups and downs of (sambhootya) life and (ashnute) attains (amṛitam) nirvaṇa.

बारहवें मन्त्र में अविद्या अथवा विद्या के अहंकार, दोनों से होने वाली हानि के विषय में बताया गया है।

अन्धन्तम इत्यस्य दीर्घतमा ऋषिः। आत्मा देवता। निचृदनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः।

अन्धन्तमः प्र विशन्ति येऽविद्यामुपासन्ते ।

ततो भूयऽइव ते तमो यऽउ विद्यायां रताः ॥१२॥

अन्धम् तमः प्र विशन्ति ये अविद्याम् उपासन्त इत्युपऽआसन्ते ।

ततः भूयऽइवेति भूयऽइव ते तमः ये ऊँऽइत्यूँ विद्यायाम् रताः ॥१२॥

(ये) जो लोग (अविद्याम्) अज्ञान में (उपऽआसन्ते) रहते हैं और उससे बाहर निकलने का प्रयास नहीं करते, वह (अन्धम् तमः) अन्धकार में (प्र विशन्ति) जीते हैं और (ये) वह ज्ञानी जो (विद्यायाम्) विद्या प्राप्ति से (रताः) अहंकारी हो जाते हैं (ते) वह (ततः) इससे (भूयऽइव ऊँ) भी अधिक (तमः) अन्धकार मय जीवन जीते हैं।

Twelfth mantra advises about the harm from the ignorance or the improper use of knowledge.

ṛiṣhiḥ andhantama ityasya deerghatamaa, devataa aatmaa,
chhandahḥ nichṛidanuṣṭup, svarahḥ gaandhaarah

**12. Om andhan-tamah pra vishanti
ye'vidyaam-upaasate
tato bhooya'iva te
tamo ya'u vidyaayaam rataah**

(ye) Those who (upaasate) prefer to stay (avidyaam) in ignorance, (pra vishanti) live their life (andhan tamah) in darkness; however, (ya) those who (rataah) become egotistical (vidyaayaam) after attaining knowledge, (te) they (bhooya) lead (tato) into (iva) even (u) greater (tamo) darkness.

तेरहवें मन्त्र में अज्ञानमय जीवन और ज्ञान के दुरुपयोग, दोनों ही की हानि के विषय में बताया गया है।

अन्यदित्यस्य दीर्घतमा ऋषिः। आत्मा देवता। अनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः।

अन्यदेवाहुर्विद्यायाऽअन्यदाहुरविद्यायाः ।

इति शुश्रुम् धीराणां ये नस्तद्विचक्षिरे ॥१३॥

अन्यत् एव आहुः विद्यायाः अन्यत् आहुः अविद्यायाः ।

इति शुश्रुम् धीराणाम् ये नः तत् विचक्षिरे इति विचक्षिरे ॥१३॥

(धीराणाम्) विद्वानों के (तत् विचक्षिरे) व्याख्यानों में (नः) हम (इति) यही (शुश्रुम्) सुनते आए हैं कि (ये) वह (अविद्यायाः) अज्ञान में जीने के परिणाम (अन्यत्) कुछ (आहुः) बताते हैं और (विद्यायाः) विद्या के दुरुपयोग अथवा उसको आचरण में न लाने के परिणाम (अन्यत्) कुछ और (एव) ही (आहुः) बताते हैं।

Thirteenth mantra advises about the harm from the ignorance or the improper use of knowledge.

ṛiṣhiḥ anyadityasya deerghatamaa, devataa aatmaa,
chhandah̐ anuṣṭup, svarah̐ gaandhaarah̐

**13. Om anyad-ev-aahur-vidyaayaa'
anyad-aahur-avidyaayaah̐
iti shushruma dheeraaṇaañ
ye nas-tad-vichachakṣhire**

(nas) We (shushruma) hear from the (vi-chachakṣhire) discourses of the (dheeraaṇaañ) learned (tad iti) that (ye) they (aahuh̐) say, (avidyaayaah̐) living in ignorance brings (anyad) different results and (vidyaayaa) misuse of knowledge or failure to practically use the knowledge in one's own life brings (anyad) different results (ev) altogether.

चौदहवें मन्त्र में अज्ञान से ज्ञान की ओर जाने का लाभ बतलाया गया है।

विद्यामित्यस्य दीर्घतमा ऋषिः। आत्मा देवता। स्वराडुष्णिक छन्दः। ऋषभः स्वरः।

विद्यां चाविद्यां च यस्तद्वेदोभयं सह ।

अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययामृतमश्नुते ॥१४॥

विद्याम् च अविद्याम् च यः तत् वेदं उभयम् सह ।

अविद्यया मृत्युम् तीर्त्वा विद्यायां अमृतम् अश्नुते ॥१४॥

(अविद्याम्) अज्ञान (च) और (विद्याम्) ज्ञान (उभयम्) दोनों ही (सह) एक चक्र में साथ साथ हैं। अज्ञानी ज्ञान प्राप्त करता है परन्तु जब तक वह ज्ञान जीवन में लागू न करे तब तक वह अज्ञान ही रहता है। जीवन में लागू करने के बाद उसको अपनी अज्ञानता का और अधिक (वेद) भान होता है और (यः) वह ज्ञान प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करता है । इस (अविद्यया) अज्ञान के (मृत्युम्) विनाश से (विद्यायां) ज्ञान की ओर जाने के (तत्) सुचक्र से मनुष्य (तीर्त्वा) बन्धनों से तर (अमृतम्) मोक्ष को (अश्नुते) प्राप्त होता है।

Fourteenth mantra discusses the benefit of moving from ignorance to enlightenment.

ṛiṣhiḥ vidyaamityasya deerghatamaa, devataa aatmaa,
chhandahḥ svaraaduṣṇik, svarahḥ ṛiṣhabhah

**14. Om vidyaañ cha-avidyaañ cha
yas-tad-ved-obhayaṃ saha
avidyayaa mṛityun teertvaa
vidyaya-amṛitam-ashnute**

(obhayaṃ) Both (avidyaañ) ignorance (cha) and (vidyaañ) enlightenment (saha) coexist in a cycle. Ignorant may attain knowledge, however, until that knowledge is implemented in one's life ignorance persists. After implementation only (yas) one (ved) realizes that there is a need to learn more. (tad) This virtuous cycle, in which (vidyaya) enlightenment highlights the need for further enlightenment, leads to (teertvaa) freedom from (mṛityun) bondage of (avidyayaa) ignorance and (ashnute) attainment of (amṛitam) nirvaṇa.

पन्द्रहवें मन्त्र में सलाह दी है कि अपने जीवन के हर क्षण को अपने अन्तिम क्षण की तरह जियो।

वायुरित्यस्य दीर्घतमा ऋषिः। आत्मा देवता। स्वराडुष्णिक् छन्दः। ऋषभः स्वरः।

वा॒युरनि॑लम॒मृ॒तम॒थेदं॑ भस्मा॑न्त॒ः शरी॑रम् ।

ओ३म् क्रतो॑ स्मर । क्लि॒बे स्म॑र । कृ॒तः स्म॑र ॥१५॥

वा॒युः अनि॑लम् अ॒मृत॑म् अथ॑ इ॒दम् भस्मा॑न्तमि॒ति भस्म॑ऽअन्तम् शरी॑रम् ।

ओ३म् क्रतो॑ इति॒ क्रतो॑ स्म॒र । क्लि॒बे स्म॒र । कृ॒तम् स्म॑र ॥१५॥

हे (क्रतो) कर्मशील मनुष्य! (अथ) निरन्तर हरेक (वा॒युः अनि॑लम्) श्वास में (ओ३म्) ईश्वर के नाम का (स्म॒र) स्मरण कर, (क्लि॒बे) ईश्वर द्वारा प्रदित सामर्थ्य का (स्म॒र) स्मरण कर, अपने (कृ॒तम्) किए हुए कर्मों का (स्म॑र) स्मरण कर। यह स्मरण मात्र अन्तिम समय में ही करने के लिए नहीं है। (इ॒दम्) इस (शरी॑रम्) शरीर की सत्ता का (अन्तम्) अन्त (भस्म॑) भस्म में है परन्तु आत्मा (अ॒मृत॑म्) अमर है।

Fifteenth mantra advises to live every moment of one's life as if it were the last moment before death.

ṛiṣhiḥ vaayurityasya deerghatamaa, devataa aatmaa,
chhandahḥ svaraaḍuṣhṇik, svarah ṛiṣhabbahḥ

15. Om vaayur-anilam-amṛitam-ath-edam

bhasma-antaṁ shareeram

o3m krato smara

klibe smara

kṛitaṁ smara

O (krato) doer of deeds! With every (vaayur anilam) breath, (ath) continuously (smara) think of (o3m) God's name, (smara) think of (klibe) the bounties God has provided to you and also (smara) think of your own (kṛitaṁ) deeds. These thoughts are not be left for just the last breadth alone. (edam) This (shareeram) physical body (antaṁ) ends in the form of (bhasma) ashes however the soul is (amṛitam) deathless.

सोलहवें मन्त्र में प्रार्थना है कि प्रभु हमें बुराईयों से दूर कर धर्मानुकूल ज्ञान और धन प्राप्त कराइये।

अग्ने नयेत्यस्य दीर्घतमा ऋषिः। आत्मा देवता। निचृत् त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः।

अग्ने नय सुपथा रायेऽअस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् ।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नमऽउक्तिं विधेम ॥१६॥

अग्ने नय सुपथेति सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् ।

युयोधि अस्मत् जुहुराणम् एनः भूयिष्ठाम् ते नमऽउक्तिमिति नमऽउक्तिम् विधेम ॥१६॥

हे (देव) दिव्य (अग्ने) प्रकाशस्वरूप जगदीश्वर! हम (विधेम) विधिपूर्वक (उक्तिम्) प्रशंसाओं द्वारा (ते) आपको (भूयिष्ठाम्) बार-बार (नमः) नमन करते हैं। (विद्वान्) सब कुछ जानने वाले प्रभु (अस्मत्) हम लोगों से (जुहुराणम्) कुटिलतारूप (एनः) पापाचरण को (युयोधि) पृथक् कीजिए। (अस्मान्) हमें (सुपथा) धर्मानुकूल मार्ग से (विश्वानि) समस्त (वयुनानि) ज्ञान और (राये) धन (नय) प्राप्त कराइये।

Sixteenth mantra has a prayer to God to remove from us the evil tendencies and to help us obtain righteous knowledge and wealth.

ṛiṣhiḥ agne nayetyasya deerghatamaa, devataa aatmaa,
chhandah nichṛit triṣṭup, svarah dhaivataḥ

16. Om agne naya supathaa raaye'asmaan
vishvaani deva vayunaani vidvaan
yuyodhy-asmaj-juhuraanam-eno
bhooyiṣṭhaan te nama'uktim vidhema

O (deva) Divine (agne) source of all illumination! We (bhooyiṣṭhaan) repeatedly (vidhema) with devotion (uktim) sing (te) your praises and (nama) bow to you. O (vidvaan) Omniscient God! Please (yuyodhy) take away (asmaj) from us the (juhuraanam) tendencies (eno) to transgress your laws. Guide us on (supathaa) the righteous path so that (asmaan) we can (naya) attain (vishvaani) all of (vayunaani) the knowledge and (raaye) wealth.

सतरहवें मन्त्र में, सोलहवें मन्त्र की प्रार्थना का उत्तर देते हुए, परमात्मा ने अपना नाम ओ३म् बताया है।

हिरण्मयेनेत्यस्य दीर्घतमा ऋषिः। आत्मा देवता। अनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः।

हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम् ।

योऽसावादित्ये पुरुषः सोऽसावहम् । ओ३म् खं ब्रह्म ॥१७॥

हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्य अपिहितमित्यपिहितम् मुखम् ।

यः असौ आदित्ये पुरुषः सः असौ अहम् । ओ३म् खम् ब्रह्म ॥१७॥

(हिरण्मयेन) ज्योति का स्वर्णिम स्रोत, (पात्रेण) जगत का प्रमुख, (सत्यस्य) अविनाशी, (अपिहितम्) सबका रक्षाकवच, (मुखम्) शब्द का स्रोत (यः) जो (असौ) वह (आदित्ये) सौरमण्डल में (पुरुषः) पूर्ण परमात्मा है, (सः) वह (असौ) परोक्षरूप में (खम्) व्यापक (ब्रह्म) परमात्मा (अहम्) मैं ही हूँ। (ओ३म्) मुझे ओ३म् नाम से जानो।

इस मन्त्र का एक और अर्थ हो सकता है। एक ढके हुए स्वर्णिम बर्तन में सत्य छिपा है। वह बर्तन हमारा अन्तःकरण ही है। सत्य को पहचानने के लिए हमें ईश्वर के स्वरूप को जानना होगा।

Seventeenth mantra provides God's response to the prayers in the sixteenth mantra. God establishes Om as his primary name.

ṛiṣhiḥ hiraṇmayenetyasya deerghatamaa, devataa aatmaa,
chhandah̐ anuṣṭup, svarah̐ gaandhaarah̐

17. Om hiraṇmayena paatreṇa satyasya-apihitam mukham

yo'saav-aaditye puruṣah̐ so'saav-aham o3m kham brahma

(asaav) That (hiraṇmayena) source of all illumination, (paatreṇa) prime entity of the universe, (satyasya) timeless, (apihitam) protector and (mukham) source of all sound, (yo) who is also (puruṣah̐) the supreme lord of (aaditye) the solar system, (aham) I (so) am (asaav) that (brahma) lord of (kham) the vast universe. (o3m) Know me by the name of OM.

Another translation of this mantra would be: The truth is hidden in a covered golden vessel. This vessel is nothing but our own conscience. In order to expose this hidden truth we need to first realize the true nature of God.